दिनांक 24 नवम्बर 1988 को प्रातः 11.00 बजे प्रशासनिक भवन, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में आयोजित प्रबन्ध बोर्ड की बैठक का कायवृत :

निम्नांकित सदस्य उपस्थित थे :-

1. डा. के. एन. नाग — अध्यक्ष
2. डा. एम. वी. माथुर
3. डा. आर. एस. पारोड़ा
4. श्री के. एम. मेहता
5. श्री सूर्यदेव सिंह बारहट
6. डा. पी. एन. मेहरोत्रा
7. डा. एस. सन. सक्सेना
8. डा. आर. सी. मेहता
9. डा. एस. आर. चौधरी
10. डा. एन. एल. अग्रवाल
11. श्री बी. एस. उज्जवल
12. श्री के. एस. माथुर
13. श्री एस. पी. पुरोहित
14. श्री आर. एस. धारीवाल — सदस्य सचिव

डा. एस. एस. आचार्य, शिक्षा सचिव, कृषि उत्पादन सचिव, पशु पालन सचिव ने बैठक मे भाग लेने की असमर्थता भेजी।

कुलपति महोदय ने सर्वप्रथम डा. पारोड़ा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली का बैठक में प्रथम बार भाग लेने पर स्वागत किया और कहा कि यह बड़े गर्व की बात है डा. पोरोड़ा जो कि इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रहे हैं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् जैसी महत्वपूर्ण संस्था में इतने उच्च पद पर आसीन हैं उन्हें राजस्थान प्रदेश की कृषि संबंधी सभी समस्याओं का ज्ञान है और अब भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के नुमाइन्दे के रूप में विश्वविद्यालय के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे सकेंगे।

बैठक की कार्यवाही के प्रारम्भ में कुलपति ने सदस्यों के विचार का सुझाव दिया और डा. पारोड़ा ने अपने स्वागत के उत्तर में कहा कि हमें केवल वर्तमान को ही नहीं देखना है साथ ही यह भी देखना है कि सन् 2000 से आगे क्या करना है और भविष्य में हमें किस तरफ जाना है। हमें एक स्ट्रेटेजी पेपर बनाना चाहिये और उसमें हमारी उपलब्धियों का विवरण करते हुए आठवी योजना में हमारी क्या क्या आवश्यकताएं होगी किस तरह की हमें मदद की आवश्यकता होगी दर्शाते हुए अपना प्रतिवेदन बनाना चाहिये। कैसी कि कमियाँ भूत में रही है उनके ऊपर भी ध्यान देना चाहिये। यह स्ट्रेटेजी पेपर सभी कार्यक्रमों व संकायों (विस्तार शिक्षा, अध्यापन व शोध) का अगले वर्षों के लिए तैयार करना चाहिये।

प्रो. एम. वी. माथुर ने कहा कि मेनेजमेन्ट फेक्टर कृषि में भी उतना ही उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है जितना कि अन्य उद्योगों में । पर्सपेक्टिव प्लान विकास का क्या है इसे अभी से कृषि के महत्व की गति को देखते हुए तैयार करना चाहिये। इस प्रकार बनायी हुई योजना भविष्य के लिये बहुत सहायक होती है।

डा. पारोड़ा ने मत व्यक्त किया कि ऐसे होनहार वैज्ञानिकों को सम्मिलित किया जाय जो नये प्रोजेक्ट्स बनाने के लिये सक्षम हों। ये प्रोजेक्ट्स ऐसे होने चाहिये जो रूटीन न होकर भविष्य की आवश्यकता को समझे और प्रदेश की समस्याओं का समाधान कर सकें। उसके अनुरूप मूलभूत सुविधायें विकसित की जाय ताकि उन सुविधाओं का उपयोग नये प्रोजेक्ट्स में हो सकेगा। इसी प्रकार का मास्टर प्लान कृषि फार्मों के लिये, वन विकास एवं भूमि विकास के लिये तैयार किये जाने चाहिये। श्री एम. वी. माथुर ने सुझाव दिया कि ऐसे सदस्यों को रखने का क्या लाभ जो कभी बैठक में आते ही नहीं है। सभी सदस्यों को बैठक में भाग लेना चाहिये । प्रोजेक्ट्स बनाते समय रूटिन अप्रोच न होकर इफेक्टिव (प्रभावी तरीके) से गेप्स को भरा जाना चाहिये। गुणात्मक परिमात्रा तरक्की के लिये साधन तैयार करने चाहिये। अध्यापक पूरी तरह से सुसज्जित हों और आगामी दस पन्द्रह वर्षों में क्या होने वाला है उसको ध्यान में रखते हुए अध्यापन कार्य को आगे बढ़ायें। यह देखना भी आवश्यक है कि देश किस ओर जा रहा है? विशेष प्रकार की संस्थाओं को इस बारे में कि आगामी वर्ष में क्या होने वाला है , किस प्रकार की खोज की आवश्यकता होगी सम्पर्क करके सबजेक्ट पेपर तैयार किया जाना चाहिये और फिर राजस्थान के लिये क्या आवश्यक है, वहाँ की परिस्थितियों में क्या हो सकता है उसे भी देखना चाहिये। शैक्षणिक कर्मचारी महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय में बनाया जा सकता है ताकि कर्मचारी, अध्यापकों को नई खोज से अवगत कराया जाये, नये बढ़ने के तरीकों से भी अवगत कराया जाय। मेनेजमेन्ट की स्थिति बहुत ही दयनीय है उसको विकसित किया जाना चाहिये लेकिन एम. बी. ए. की नकल नहीं की जानी चाहिये।

कुलपति ने फोरकास्ट के लिये नये मेगजीन जो निकले रहे हैं उनकी ओर ध्यान दिलाया कि इनसे ट्रेन्ड का मालूम पड़ता हैकि वैज्ञानिकों की खोज किसत तरफ जा रही है और किन विषयों पर हो रही है।

बाद विचार विमर्श यह तय किया गया कि डा. एस. एन. सक्सेना दिनांक 20. 1. 89 तक अपना एकेडेमिक प्लान बनाकर दे दें और उसकी प्रतियाँ सभी सदस्यों को दे दी जाय ताकि उस पर विस्तृत विचार विमर्श बोर्ड की अगली बैठक में हो सके। श्री सूर्यदेवसिंह बारहठ ने सुझाव दिया कि बोर्ड के सदस्य जिसमें डा. एम. वी. माथुर, श्री के. एम. मेहता, श्री सूर्यदेवसिंह बारहठ, वित्त नियंत्रक, कृषि उत्पादन सचिव के साथ हिसार कृषि विश्वविद्यालय , पन्त नगर कृषि विश्वविद्यालय में जाये ताकि वहाँ नयी खोज को देख कर शैक्षणिक योजना तैयार करने में अपना प्रभावपूर्ण मत व्यक्त कर सकें।